अनुभवात्मक अधिगम तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति2020: प्रावधान तथा चुनौतियां

नूर यासमीन* डॉ रश्मि श्रीवास्तव **

*शोध छात्राः लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

**एसोसिएट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग, महिला विद्यालय डिग्री कॉलेज, लखनऊ

Article History:

Received: 19-08-2025

Accepted: -20-09-2025

Published: 30-09-2025

Keywords:
अनुभवात्मक, राष्ट्रीय शिक्षा, प्रावधान, चुनौतियां, पारंपरिक, आधुनिक, चिंतन शील, ठोस अनुभव, अमूर्त संकल्पनाएं, सक्रिय प्रयोग

Page No.: 222-228

Article code: V2025026

Access online at: https://veethika.co.in

Source of support: Nil

Conflict of interest: None declared

Published By: Pt. R.S.T.M. Society, Lucknow, India

Corresponding Author:

नूर यासमीन

शोध छात्राः लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Email: nooryasmeen012345@gmail.com

शोध-सार

प्राचीन समय से चली आ रही शिक्षा जो कि पूरी तरह से मौखिक विधि पर आधारित थी,परंतु वैदिक काल का अध्ययन करे तो यह पता चलता है,कि गुरुकुल प्रणाली पूरी तरह से अनुभवात्मक अधिगम से अवगत कराती है,प्राचीनकाल में गुरु शिष्य संबंध ,गुरु के लिए भिक्षा मांगना गुरुकुल में रहना गुरु के साथ रहकर सभी तरह के कार्य प्रत्यक्ष रूप से सीखना अनुभवात्मक अधिगम का एक भाग ही है ,परंतु आज वर्तमान युग में अनुभवात्मक अधिगम का महत्व एक बार फिर से बताने की आवश्यकता महसूस हुई, जिसको ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध में हम अनुभवात्मक अधिगम तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020में दिए गए अनुभवात्मक अधिगम संबंधी प्रावधान और चुनौतियों का अध्ययन किया गया है , प्रस्तुत शोध में हम अनुभवात्मक अधिगम की अवधारणा को समझते हुए अनुभवात्मक अधिगम के उद्देश्यों के बारे में जानेंगे अनुभवात्मक अधिगम के प्रकारों का वर्णन कर डेविड कोळब का अनुभवात्मक शिक्षण मॉडल की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति2020 में वर्णित अनुभवात्मक अधिगम संबंधित बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है, अनुभवात्मक अधिगम के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों का उल्लेख कर,राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020में अनुभवात्मक संदर्भी प्रावधान के अनुपालन में आने वाली चुनौतियों का वर्णन करके निष्कर्ष निकाला गया है |

प्रस्तावना

अनुभवात्मक अधिगम -

अनुभवात्मक अधिगम अनुभव आधारित अधिगम को परिभाषित करता है।जिसके अंतर्गत करके सीखना, कला समेकित अधिगम, व्यवहारगत अधिगम शामिल है।"अनुभवात्मक अधिगम रट्टा अधिगम या प्रबोधक अधिगम से नवीन अनुभव है।क्योंकि उस अधिगम में शिक्षार्थी तुलनात्मक रूप में निष्क्रिय भूमिका निभाता है।"परंतु अनुभवात्मक अधिगम के अन्य स्वरूप में जैसे कि क्रियात्मक अधिगम ,सहयोगी अधिगम, सेवा अधिगम, रोमांचित अधिगम,और स्थिर अधिगम के साथ सक्रिय भूमिका निभाता है।"हाथों से सीखना अनुभवात्मक अधिगम का एक रूप हो सकता है,जिसका वर्णन महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन 3एच (हार्ट, हेड, हैंड) के बारे में विस्तार से बताया गया है, अनुभवात्मक शिक्षा रटने या उपदेशात्मक शिक्षा से अलग है" अनुभवात्मक अधिगम प्रत्यक्ष अनुभव को एकाग्र करके उसे चिंतन के साथ जोड़ता है।यह अधिगम हमारे पूर्व अनुभव से प्राप्त पूर्व ज्ञान की नींव पर निर्मित होता है।अनुभवात्मक अधिगम विद्यार्थियों में सामूहिक सहभागिता को जाग्रत करता है । "इस प्रकार अनुभवात्मक अधिगम कार्य करने पर चिंतन द्वारा अधिगम की धारणा है, यह धारणा अन्यों के अतिरिक्त जॉन डीवी, कर्ट लेविन और जीन प्याज़े द्वारा दिए गए अधिगम सिद्धांतों पर आधारित धारणा है।" अनुभवात्मक अधिगम को अक्सर अनुभवात्मक शिक्षा शब्द के समानार्थी के रूप में प्रयोग किया जाता है,लेकिन अनुभवात्मक शिक्षा व्यक्तिगत सीखने की प्रक्रिया पर विचार करती है।कहने का तात्पर्य यहां ये है कि अनुभवात्मक शिक्षा से विद्यार्थी का सामूहिक विकास के साथ साथ उसका व्यक्तिगत विकास भी संभव है, "इस प्रकार अनुभवात्मक शिक्षा की तुलना में, अनुभवात्मक शिक्षा सीखने वाले ओर सीखने के संदर्भ से संबंधित अधिक ठोस मुद्दों से सम्बंधित है, अनुभव मन में चिपके रहते है और सूचना प्रतिधारण में सहायता करते है।

"अनुभवात्मक शिक्षण में सीखना एक व्यवहारगत दृष्टिकोण को परिभाषित करता है कक्षा में सामने बैठे शिक्षक द्वारा छात्रों को अपना ज्ञान प्रदान करने और हस्तांतरित करने से सीखने की प्रक्रिया आगे बढ़ती है। यह सीखने को ऐसा अनुभव बनाता है जो कक्षा से परे जाता है और सीखने का एक सफल तरीका खोजता है, अनुभवात्मक शिक्षा का एक उदाहरण चिड़िया घर में जाना और चिड़ियाघर के वातावरण के साथ अवलोकन और बातचीत के माध्यम से सीखना है, न कि किताब से जानवरों के बारे में पढ़ना इस प्रकार व्यक्ति दूसरों के अनुभवों के बारे मे सुनने या पढ़ने के बजाय सीधे ज्ञान के साथ खोज और प्रयोग करता है। इसी तरह बिजनेस स्कूल, इंटर्नशिप और जॉब में, छात्र की रुचि के क्षेत्र में अवसर मूल्यवान अनुभवात्मक शिक्षा प्रदान कर सकते है, जो वास्तविक दुनिया के वातावरण को छात्र की समग्र समझ में महत्वपूर्ण योगदान देता है। "अनुभवात्मक अनुभवात्मक अधिगम का तीसरा उदाहरण बाइक चलाना सीखना है।"

"कोळब द्वारा निर्धारित चार चरणीय अनुभवात्मक अनुभवात्मक अधिगम मॉडल को चित्रित कर सकती है ।"और नीचे चित्र संख्या- 1 में रेखांकित की गई है ।"इस उदाहरण का अनुसरण करते हुए ,"ठोस अनुभव" चरण , में शिक्षार्थी "यहां और अभी" बाइक के साथ शारीरिक रूप से बातचीत करता है ।"यह अनुभव "अवलोकन और प्रतिबिंब का आधार" बनाता है और शिक्षार्थी को यह विचार करने का समय मिलता है, की क्या काम कर रहा है या क्या नहीं (चिंतन शील अवलोकन), सामान्य रूप से बाइक चलाने के बारे में एक सामान्यिकृत सिद्धांत या विचार तैयार करना (अमूर्त अवधारणा) और सवारी में किए गए अगले प्रयास में सुधार के तरीकों के बारे में सोचना (सक्रिय प्रयोग) सवारी करने का हर नया प्रयास पिछले अनुभव , विचार और प्रतिबिंब के चक्रीय पैटर्न से सूचित होता है। डेविड कोळब का अनुभवात्मक शिक्षण मॉडल-(डेविड कोलब 1984)

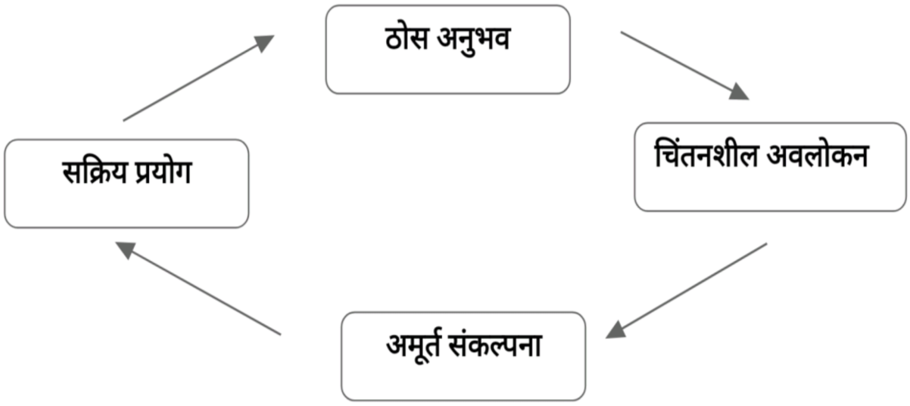

राष्ट्रीय शिक्षा नीति2020-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि सभी चरणों(प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर) में प्रायोगिक आधारित अधिगम को अपनाया जाएगा , जिसमें अन्य चीजों के अलावा स्वयं करके सीखना और प्रत्येक विषय में कला और खेल को एकीकृत किया जाएगा ऊर्जा आधारित शिक्षणशास्त्र को प्रत्येक विषय में एक मानक शास्त्र के तौर पर देखा जाएगा "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनुभवात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करते हुए कहा गया है, वर्तमान अधिगम प्रतिमान (लर्निंग आउटकम) और वांछनीय अधिगम परिणामों के बीच खाई को पाटने के लिए कुछ विषयों में कक्षा कक्षीय प्रक्रियाओं में परिवर्तन होंगे, जहां भी उचित होगा वहां इन्हें दक्षता- आधारित अधिगम और शिक्षा की ओर उन्मुख किया जाएगा, आकलनों के उपकरणों जिसमें सीखने " के रूप में" "का" " के लिए"आकलन शामिल है" को दिए गए वर्ग के हर विषय के अधिगम परिणामों, क्षमताओं और रुझान के साथ भी संरेखित किया जाएगा।" इसीलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020अनुभव आधारित शिक्षण शिक्षा का अमूल्य अंग मानती है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी)अनुभवात्मक अधिगम पर जोर देती है, यह नीति शिक्षा को अधिक सार्थक और आकर्षक बनाने के लिए छात्रों को प्रयोग करने , खोजने और अनुभव करने की अनुमति देती है। क्योंकि अनुभवी अधिगम व्यक्ति का ध्यान अनुभव पर केंद्रित करता है यह अनुभव जागरूक रहते हुए संसार में सहभागिता करने में और विश्व के विषय में पढ़ने तक ही सीमित नहीं है, अपितु यह अध्ययन को "वास्तविक" संसार के साथ जोड़ने का एक साधन है।अंतःअनुशासनीय अधिगम एवं संरचनात्मक अधिगम की नींव पर अनुभवी अधिगम का निर्माण किया जाता है|"कला - समन्वय(आर्ट इंटीग्रेशन) एक क्रॉस करिकुलर शिक्षण दृष्टिकोण है जिसमें विविध - विषयों की अवधारणाओं के अधिगम आधार के रूप में कला और संस्कृति के विभिन्न अवयवों का उपयोग किया जाता है अनुभव आधारित अधिगम पर विशेष बल दिए जाने के अंतर्गत कला - समन्वित शिक्षण को कक्षा प्रक्रियाओं में स्थान दिया जाएगा ,जिससे न सिर्फ कक्षा ज्यादा आनंदपूर्ण बनेगी बल्कि भारतीय कला और संस्कृति के शिक्षण में समावेश से भारतीयता का सभी बच्चों को परिचय हो पाएगा"

शोध उद्देश्य -

1. अनुभवात्मक अधिगम की अवधारणा एवं उसके शैक्षिक महत्व को स्पष्ट करना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनुभवात्मक अधिगम से संबंधित प्रमुख प्रावधानों का अध्ययन करना।
3. अनुभवात्मक अधिगम को लागू करने हेतु एन ई पी 2020 में सुझाय गए उपायों एवं रणनीतियों का विश्लेषण करना।
4. विद्यालय एवं उच्च शिक्षा स्तर पर अनुभवात्मक अधिगम को अपनाने में आने वाली चुनौतियों की पहचान करना।
5. शिक्षकों विद्यार्थियों तथा संस्थाओं के दृष्टिकोण से अनुभवात्मक अधिगम की व्यावहारिकता का मूल्यांकन करना।
6. अनुभावात्मक अधिगम को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने के लिए संभावित समाधान एवं सुझाव प्रस्तुत करना।
7. अनुभवात्मक अधिगम को भारतीय संदर्भ में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कौशल विकास और समग्र शिक्षा से जोड़कर देखना।

शोध प्रश्न -

1. अनुभवात्मक अधिगम की संकल्पना क्या है और यह पारंपरिक अधिगम पद्धतियों से किस प्रकार भिन्न है?
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देने के लिए कौन-कौन से प्रावधान किए गए हैं?
3. अनुभवात्मक अधिगम को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करने के लिए कौन-कौन सी नीतिगत एवं व्यावहारिक कदम उठाए जा सकते हैं?

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है, यह शोध गुणात्मक स्वरूप का शोध है, प्रस्तुत शोध में डेटा स्रोत के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दस्तावेज और अनुभवात्मक अधिगम पर प्रकाशित शोध पत्र पुस्तके रिपोर्ट एवं शैक्षिक पोर्टल्स का उपयोग किया गया है।

अनुभवात्मक अधिगम के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधान -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देने के लिए कई प्रावधान किये गए है, इस नीति में कहा गया है। कि शिक्षा से ना केवल सृजनात्मक क्षमताओं को बढ़ाया जाए बल्कि इसके साथ साथ साक्षरता और सांख्यिकी की आधारभूत क्षमताओं को भी बढ़ाना सहायक हो, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार बालकों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बालको में "सामाजिक नैतिक और भावनात्मक स्वभाव का भी विकास संभव हो।"इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निम्नलिखित उपकरण और विधियों का उल्लेख किया गया है।

- **भूमिका निर्वहन -** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देने के लिए भूमिका निर्वहन विधि को प्रोत्साहित करती है, जो छात्रों को सक्रिय रूप से शामिल करती है और उन्हें वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों से जोड़ती है। यह दृष्टिकोण सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल के बीच अंतर को कम करने में मदद करता है।भूमिका निर्वहन, अनुभवात्मक अधिगम का एक हिस्सा है, जो छात्रों को सक्रिय भागीदारी के माध्यम से अनुभव प्राप्त करके सीखने में मदद करता है। यह विधि छात्रों को एक कार्य में सक्रिय रूप से डूबने की अनुमति देती है, जिससे वे अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं। भूमिका निर्वहन के बाद, छात्रों को अपने अनुभवों पर विचार करने, साथियों के साथ चर्चा करने, और सीखी गई बातों पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- **समूह में कार्य करना -** अनुभवात्मक अधिगम में समूह में कार्य करने की योग्यता कई तरह से सहायक होती है, क्योंकि यह टीम वर्क, संचार और समस्या-समाधान जैसे महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने में मदद करती है। अनुभवात्मक अधिगम गतिविधियों में, प्रतिभागी एक साझा लक्ष्य की ओर काम करते हैं, जिससे टीम वर्क, संवाद और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा मिलता है।
- **पोर्टफोलियो बनाना -** पोर्टफोलियो में अनुभवात्मक अधिगम कई तरह से सहायक होता हैजो छात्रों को उनके जीवन के , अनुभवों से प्राप्त ज्ञान का प्रदर्शन करने और कॉलेज क्रेडिट अर्जित करने का अवसर प्रदान करता है। यह छात्रों को अपने करियर के लक्ष्यों को प्रतिबिंबित करने और संभावित नियोक्ताओं ,कौशल और क्षमताओं को प्रदर्शित करनेको अपनी कहानी बताने का एक मंच प्रदान करता है।
- **परियोजनाएं बनाना -** एनईपी 2020 अनुभवात्मक अधिगम को आधुनिक शिक्षा की आधारशिला मानती है, जो पारंपरिक रटने की शिक्षा से परे एक समग्र, छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण की वकालत करती है। यह नीति छात्रों को इंटरैक्टिव और सहभागी शिक्षण अनुभवों में शामिल करके कक्षाओं को गतिशील स्थानों में बदलने पर जोर देती है, जिससे सीखना अधिक सार्थक और आकर्षक बनता है। एनईपी 2020 परियोजना कार्य, इंटर्नशिप, फील्ड विजिट और विभिन्न विषयों में हाथों-हाथ गतिविधियों को प्रोत्साहित करती ताकिअनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा दिया जा सके।

- **स्वांकलन एवं सहकर्मी आकलन -** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी)अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देने के लिए स्वजिसका उद्देश्य छात्रों के सीखने के अनुभव को अधिक ,आकलन और सहकर्मी आकलन को महत्वपूर्ण मानती है- सार्थक और प्रभावी बनाना है। यह नीति छात्रों के उच्चक्रम कौशल जैसे कि विश्लेषण और आलोचनात्मक चिंतन का - परीक्षण करने के लिए विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उनके आकलन का समर्थन करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अनुभवात्मक अधिगम संदर्भी प्रावधान के अनुपालन की चुनौतियां-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनुभवात्मक अधिगम को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है । इसके अतिरिक्त करके सीखना, परियोजना विधि, भ्रमण विधि, को भी महत्वपूर्ण बताया है, इसके तहत विद्यार्थियों को केवल कक्षा में पढ़ाई से बाहर वास्तविक जीवन के अनुभवों के माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करने की बात की गई है।इसके बाद भी अनुभवात्मक अधिगम के संदर्भ में कुछ चुनौतियां जो आज भी हमारे सामने आती है।

1.शिक्षित शिक्षकों का अभाव - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनुभवात्मक अधिगम को जितना ही महत्व दिया है|उतना ही ये दृष्टिगोचर होता है, पहले से नियुक्त शिक्षक जो कि आज के जमाने के हिसाब से कहीं तकनीकी के क्षेत्र में पीछे रह गए है, तो कहीं इंटरनेट के लाभों से भी अवगत नहीं है , ऐसे में आधुनिकीकरण के इस दौर में समय रहते वह नई सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों से भली भांति अवगत नहीं हो पाते ,जिसके चलते जो प्रशिक्षण उनको प्रशिक्षित कर एक नए दौर का शिक्षक बनाने में सहायक है ,वह उससे पिछड़ जाते है और यही कारण है कि प्रशिक्षण न लेने की वजह से अनुभवात्मक अधिगम की गहराई को वह समझ नहीं पाते और अपने शिक्षण कार्य में उसका प्रयोग नहीं करते, जिस वजह से विद्यार्थी जो देश व राष्ट्रीय का आने वाला भविष्य है, वह अनुभवात्मक अधिगम के महत्वता को अपने अंदर आत्मसात नहीं करपाते , अतः आवश्यक है कि बदलते समय के साथ अब हमें भी बदलना होगा ,शिक्षकों को प्रशिक्षण लेना होगा कि वह कैसे अनुभवात्मक अधिगम के जरिए बच्चों को शिक्षित करे और उनके व्यवहार में शिक्षा को जाग्रत करे न कि सिर्फ पुस्तकीय आधारित विद्या पर जोर दे।

2.संसाधनों की कमी - संसाधनों की कमी अनुभवात्मक अधिगम के अनुपालन की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है, अनुभवात्मक अधिगम के लिए आवश्यक संसाधनों , जैसे - प्रयोगशाला, सुविधाएं, तकनीकी उपकरण और व्यवहारिक अनुभवों के लिए उपर्युक्त स्थान की कमी हो सकती है , जो कि नीति के क्रियान्वयन में रुकावट डालती है। संसाधनों की कमी की बात करे तो ये पता चलता है, कि ये संसाधन हमारे शहरों में बने विद्यालयों स्कूलों में तो उपलब्ध हो जाते है, परंतु हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में इसका अभाव हमेशा से रहा है ,और यह ज्ञात होता है कि आगे भी रहेगा , क्योंकि जिस हिसाब से शहरों में एक बड़ी मात्रा में फीस शुल्क लिया जाता है जिसके बदले निजी स्कूल चलाने वाले शिक्षा देने को एक व्यापार के रूप में चलाए जारे है। जिनका उद्देश्य मात्र बच्चों से एक बड़ी मात्रा में फीस शुल्क लेना है ,जिस कारण उन्हें अनुभवात्मक अधिगम को अनुपालन करने के लिए उपर्युक्त संसाधन उपलब्ध कराए जाते है, वही ग्रामीण क्षेत्रों में न तो अच्छे स्कूल है, और न ही उपर्युक्त संसाधन ऐसे में ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी अनुभवात्मक शिक्षा के अनुपालन में कठिनाई महसूस करते है ।अतः आवश्यक है कि सरकारी योजनाओं के साथ साथ उपर्युक्त संसाधनों को भी भारी मात्रा में उपलब्ध कराया जाए । शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की उपलब्धता में कोई भेदभाव न रहे इसके लिए आवश्यक है कि है हम सभी लोग सरकारी योजनाओं के प्रति भली भांति जागरूक रहे ,ताकि समय के साथ साथ सभी योजनाओं से लाभान्वित हो सके।

3.व्यवहारगत चुनौतियों- अनुभवात्मक अधिगम के लिए सबसे मुख्य चुनौती आजकल के बच्चों के व्यवहार उनके दैनिक जीवन की दिनचर्या से भली भांति दृष्टिगोचर होती है।आज आधुनिक युग इतना आधुनिक हो गया है कि कोई भी विद्यार्थी अपने चिंतन अपने विचारों से ज्यादा इंटरनेट पे मिले ज्ञान पर भरोसा करते है , आजकल के बच्चे कोई भी काम करने से पहले मोबाइल इंटरनेट का प्रयोग सबसे पहले करते है , जिसके चलते वह अपनी क्षमताओं को पूर्ण रूप से जान ही नहीं पाते और पूरी तरह से मशीन लर्निंग पर ही निर्भर होते जारे है ।वह अनुभवात्मक अधिगम की महत्वता को नहीं समझना चाहते, अपना

कार्य समय से पूर्ण करने की जल्दी में कंप्यूटर, टैब, मोबाइल, पर निर्भर है ,और आलस भरे जीवन को जी रहे है , विद्यार्थी में वह लगन वह ईमानदारी खत्म होती नजर आ रही है जो पहले कभी थी, अतः व्यवहारगत चुनौतियां अनुभवात्मक अधिगम के संदर्भ में बड़ी बाधा है।

4.पाठ्यक्रम संबंधी चुनौतियां- अनुभवात्मक अधिगम एक ऐसी शिक्षा विधि है।जिसमें छात्र अपनी गतिविधियों के माध्यम से सीखते है जैसे,- प्रायोगिक अनुभवों और परियोजना विधि । इन विधियो के कई लाभ हैंलेकिन इसमें पाठ्यक्रम संबंधी कई , चुनौतियाँ भी हैं।

निष्कर्ष –

अनुभवात्मक अधिगम पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का ध्यान छात्रों को विभिन्न स्थितियों में आसानी से अपने ज्ञान को लागू करने में सक्षम बनाने के लिए समर्पण का प्रतिबिंब है। एनईपी 2020 में अनुभवात्मक शिक्षण को शामिल करना छात्रों को विषय के बारे में उनके ज्ञान को गहरा करता है और सीखने के लिए उनके जुनून को जागृत करता है। यह नीति टीम वर्क, जिज्ञासा और व्यावहारिक जांच को बढ़ावा देकर आजीवन सीखने के प्रति प्रेम को भी बढ़ावा देती है।अनुभवात्मक अधिगम महत्वपूर्ण है क्योंकि यह छात्रों को सार्थक तरीकों से जोड़ने, प्रेरित करने और चुनौती देने की क्षमता रखता है, जो शैक्षिक परिदृश्य को आकार देने और 21वीं सदी में छात्रों को सफलता के लिए तैयार करने में एक प्रेरक शक्ति बन जाता है। अनुभवात्मक अधिगम छात्रों को वास्तविक दुनिया के मुद्दों के साथ बातचीत करने और उनके मूल कारणों और संभावित समाधानों की बेहतर समझ प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। आजकल, अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से, शिक्षण संस्थान गतिशील, इमर्सिव और हैंड्स-ऑन सीखने के अनुभव बना रहे हैं जो छात्रों को तराशने, प्रयोग करने और खोजने के लिए सशक्त बनाते हैं। अनुसंधान से पता चलता है कि सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी ज्ञान प्रतिधारण को बढ़ाती है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 कई मायनों में अनुभवात्मक अधिगम के सिद्धांतों और महत्व के साथ संरेखित है। भारत के लिए यह दूरदर्शी नीति शिक्षा के लिए एक समग्र और परिवर्तनकारी दृष्टिकोण की आवश्यकता को पहचानती है, और एनईपी में उल्लिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने में अनुभवात्मक अधिगम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एनईपी 2020 अनुभवात्मक शिक्षण को आधुनिक शिक्षा के आधारशिला के रूप में स्थापित करते हुए एक समग्र, छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण की वकालत करता है जो पारंपरिक रट्टा सीखने से परे है। व्यावहारिक ज्ञान और वास्तविक दुनिया के कौशल को बढ़ावा देकर, एनईपी 2020 एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना करता है जो छात्रों को शैक्षणिक रूप से और 21वीं सदी में जीवन और कार्य की जटिलताओं के लिए तैयार करती है। एनईपी 2020 में अनुभवात्मक अधिगम पर ध्यान केंद्रित करने का एक लाभ यह है कि नीति छात्रों को इंटरैक्टिव, सहभागी और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों में निहित सीखने के अनुभवों में शामिल करने की आवश्यकता पर जोर देती है।कुछ साल पहले, हमारी पारंपरिक शिक्षा प्रणाली का ध्यान मुख्य रूप से विषय को रटने पर था, लेकिन समकालीन शिक्षा प्रणाली के संबंध में, यहां गतिविधि केंद्रित पाठ्यक्रम पर अधिक जोर दिया गया है, इसलिए इस संदर्भ में अनुभवात्मक अधिगम की आधुनिक शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका है। भूमिका निभाना, खेल, केस स्टडी, महत्वपूर्ण घटनाएं, सिमुलेशन जैसे "इन-बॉक्स" अभ्यास, सोशियो-ड्रामा और मूल्य स्पष्ट करने वाली गतिविधियाँ वर्तमान कक्षाओं में उपयोग की जाने वाली प्रमुख अनुभवात्मक शिक्षण रणनीतियाँ हैं। अनुभवात्मक कक्षा में छात्र वास्तविक जीवन की स्थितियों को पचा सकते हैं, उपन्यास व्यवहारों को आजमा सकते हैं और एक सुरक्षित वातावरण में प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकते हैं। अनुभवात्मक अधिगम के बारे में असाइनमेंट छात्रों को सिद्धांत को व्यवहार से जोड़ने और पाठ्यक्रम सामग्री के आलोक में वास्तविक परिस्थितियों का मूल्यांकन करने में सहायता करते हैं।

सुझाव -

1. शिक्षण प्रशिक्षण - अनुभवात्मक अधिगम को लागू करने के लिए शिक्षकों का सतत व्यावसायिक प्रशिक्षण आवश्यक है।

2. **शिक्षण सामग्री का विकास -** प्रायोगिक ,प्रोजेक्ट आधारित और स्थानीय संदर्भों पर आधारित अध्ययन सामग्री तैयार की जाए।
3. **बुनियादी ढांचे सुदृढ़ीकरण -** प्रयोगशालाओं,Ict , टूल्स और स्थानीय संसाधनों का विकास किया जाए।
4. **शिक्षण में नवाचार -** प्रोजेक्ट वर्क फील्ड विजिट, इंटर्नशिप, लोकल, आर्ट क्राफ्ट एवं सामुदायिक पद्धति अपनाई जाए।
5. **निरंतर मूल्यांकन -** अनुभवात्मक अधिगम की सफलता को मापने के लिए निरंतर और बहुआयामी मूल्यांकन पद्धति अपनाई जाए।
6. **नीतिगत सहयोग -** नीतिगत सहयोग सरकार एवं शिक्षा संस्थानों को पर्याप्त वित्तीय व प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध कराना चाहिए।
7. **अभिभावक एवं समुदाय की भागीदारी -** शिक्षा प्रक्रिया में स्थानीय समुदाय और अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

सोनी,ज्.अन्य (2019). अनुभवी अधिगम, इक्कीसवीं सदी पब्लिकेशन पटियाला, 79, शेखपुरा पी.ओ. प्रकाशन , पंजाब यूनिवर्सिटी,

श्रीवास्तव, र. (2018), महात्मा गांधी का शिक्षा चिंतन , प्रकाशन केंद्र राष्टीय पुस्तक न्यास, भारत नेहरू भवन इंस्टीट्यूशनल एरिया फेज - 2 वसंत कुंज, न्यू दिल्ली

भाटिया, एस.(2023), अनुभवजन्य शिक्षा , राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन की पहल, पेरागांन इंटरनेशनल पब्लिशर्स.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), मानव संसाधन विकास मंत्रालय ,भारत सरकार।

मैकार्थी, पी0आर0. एंड मैकार्थी, एच.एम. (2006), वेन केस स्टडीज आर इनफ, इंटीग्रेटेड एक्सपीरिएंशियल लर्निंग इंटू बिज़नस करिकुला, जर्नल ऑफ एजुकेशन फॉर बिज़नस I

क्राफ्ट, आर0 जी0 (1994), बाइक राइडिंग एंड द आर्ट ऑफ लर्निंग, आई.एन 0एल0 बी0 बार्नेस सी रोनाल्ड एंड क्रिस्टेनसन एंड ए0 जे0 हैनसेन।

लू.आर(2002), ए मेटा एनालिटिकल एक्जामिनेशन ऑफ कोलब लर्निंग स्टाइल, प्रीफरेंस अमोघ बिजनेस मेजर . जर्नल ऑफ एजुकेशन फॉर बिज़नस।

डेविड क (1984), एक्सपीरिएंशियल लर्निंग : एक्सपीरियएंस एज सोर्स ऑफ लर्निंग एंड डेवलपमेंट इंग्लवुड क्लिफ्स,एन. जे प्रिंट्स हॉल.पी.21

जायसवाल, स (2022- 2023), भारतीय शिक्षा पद्धति का विकास एवं चुनौतिया, प्रकाशन केंद्र, डालीगंज रेलवे क्रॉसिंग सीतापुर रोड लखनऊ।

मदान, के0 वी0 एस0., बाला, अ (2022), शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता, पीयरसन इंडिया एजुकेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड